

का बूँदों में ऊपर से बिखेरा जाना, अधिक परिमाण में प्राप्त, प्रकट होना या दिखाई देना, बहुत अच्छी तरह झलकना, खूब प्रकट होना, ओसाया जाना या अर्थात् गल्ले को हवा में इस तरह उड़ाना कि दाना अलग और भूसा अलग हो जाए।

बरसात स्त्री. (देश.) 1. बरसना 2. पानी बरसने का समय या मौसम, वर्षा काल या ऋतु 3. वर्षा, बारिश।

बरसाती पुं.वि. (तद्.) वर्षा ऋतु में होने वाला, बरसात से संबंधित, बरसात के समय का स्त्री. (देश.) छत और खिड़कियों के बाहर छायादार जगह 1. बड़े भवनों, कार्यालयों आदि में प्रवेश दरवाजे के बाहर बनाया गया ढका हुआ, विस्तृत स्थल जहाँ छाया हो और लोगों को चढ़ने-उतरने के लिए वाहन खड़े किए जाते हैं (बरसाती प्रायः सरकारी भवनों, रईसों के बंगलों में आवश्यक रूप से शोभा के लिए भी बनाए जाते हैं) 2. एक प्रकार का प्लास्टिक या मोमजामा का पारदर्शी कोटनुमा ढीला आच्छादन जो सिर से पैर तक पहन लेने पर व्यक्ति के शरीर को बारिश में भीगने से बचाता है।

बरसाना स.क्रि. (तद्.) 1. पानी की वर्षा करना 2. बरसात की तरह ऊपर से कोई वस्तु गिराना, बिखेरना या छितराना जैसे- धन बरसाना, फूल बरसाना 2. दावन किए हुए अन्न के दाने को भूसा से अलग करने के लिए हवा में गिराना या उछालना पुं. (तद्.) द्वापर-युग के प्रसिद्ध गोप प्रमुख 'वृषभानु' का गाँव 'बरसाना' नाम से विख्यात, यह स्थान एक प्रसिद्ध वैष्णव तीर्थ है और राधा वृषभानु की पुत्री थीं, यहाँ राधिका जी का मंदिर है।

बरसी स्त्री. (तद्.) मृत्यु की वार्षिक तिथि, मृतक के देहांत के बाद पहली वार्षिक तिथि पर किया जाने वाला श्राद्ध।

बरह पुं. (फा.) 1. एक प्रकार की नुकीली घास, कुश 2. मोर पक्षी का पुच्छ पंख, मोरपंख का गुच्छा 3. पत्ता।

बरहा पुं. (तद्.) 1. बहते पानी को खेतों में पहुँचाने वाली छोटी नाली 2. मोटा रस्सा 3. मयूर पक्षी।

बरही स्त्री. (तद्.) 1. मयूरी पक्षी 2. साही नामक जंगली जंतु जिसके शरीर में काँटे ही काँटे होते हैं 3. बच्चे को जन्म देने के बारहवें दिन होने वाला महिला का स्नान तथा अन्य उत्सव, परिजनों के लिए आयोजित भोज 4. मोटी रस्सी 5. लकड़ी का गट्ठा, बोझ।

बरहीपीड़ स्त्री. (तद्.) मोर के पंखों का मुकुट, (बर्हिपीड़)।

बरहीमुख पुं. (तद्.) (बर्हिमुख) देवता।

बरा पुं. (तद्.) 1. मूंग या उड़द की पिसी हुई दाल से बना एक प्रकार का खाद्य पदार्थ (बड़ा) 2. वरपक्ष से वधू के घर को भेजे जाने वाले खाद्योपहार, आभूषण वस्त्र आदि 3. भुजा पर पहना जाने वाला एक प्रकार का आभूषण।

बराए अव्य. (फा.) के लिए, के अर्थ में प्रयुक्त होने वाला अव्यय शब्द।

बराक पुं. (तद्.) 1. बगुले जैसा एक प्रकार का ढोंगी पक्षी 2. तुच्छ, व्यक्ति, बेचारा, अधम, दया का पात्र, ढोंगी 3. महादेव 4. लड़ाई।

बराकी स्त्री. (तद्.) 1. दयनीय या बेचारी स्त्री, अभागिनी 2. बगुली।

बराट स्त्री. (तद्.) कौड़ी, छदाम ला.अर्थ. नगण्य या तुच्छ वस्तु, व्यक्ति।

बराबर वि. (फा.) 1. समतुल्य, समान, एक जैसा, जिसमें ऊबड़ खाबड़ न हो, समतल 2. साथ-साथ, लगातार 3. पास में, निकट 4. बारंबार 5. क्रमशः, एक पंक्ति में स्थित 6. सर्वदा, सभी काल में, हमेशा 7. बराबर (=) का चिह्न मुहा. बराबर करना- समाप्त करना, मार देना, जैसे उसने गाँव की संपत्ति बराबर कर दी 8. हार-जीत में से कुछ भी न होकर समान होना 9. उद्वंडता जैसे- बराबरी करना- उद्वंडता करना, बड़ों से बराबरी करने की धृष्टता करते हो।

बरामद वि. (फा.) 1. सामने आया हुआ, खोजकर लाई गई खोई वस्तु, उपलब्ध की गई 2. बाहर आया हुआ 3. निर्यात किया जाने वाला माल।